राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक 5 | विधान सभा के पंचम सत्र का प्रथम दिवस | संख्या 1

सोमवार,

दिनांक, 11 अगस्त, 1969

(विधान सभा की बैठक म. प. 3.2 बजे विधानसभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई)

(श्री नि'ज'नाथ आचार्य, अध्यक्ष, पदासीन)

शपथ-ग्रहण

श्री अध्यक्ष : श्री शीशराम ओला द्वारा शपथ।

श्री सचिव : (राजस्थान विधानसभा) श्री शीशराम ओला !

श्री विजयसिंह (मकराना) : (श्री शीशराम ओला के-सदन-पटल के समीप आने पर) अध्यक्ष महोदय, एक व्यवस्था का सवाल यह है कि एक व्यक्ति यदि किसी को कत्ल कर देता है तो उसको सजा मिलती है मगर श्री शीशरामजी ओला ने लोकतन्त्र की हत्या की है ····

श्री अध्यक्ष : आर्डर ! (श्री विजयसिंह के बोलते रहने पर) अंकित न किया जाय।

श्री विजयसिंह : + + +

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज ! माननीय सदस्य !

श्री विजयसिंह : + + +

श्री अध्यक्ष : अंकित न किया जाय।

श्री विजयसिंह : + + +

श्री अध्यक्ष : इलेक्शन पिटीशन। इलेक्शन पिटीशन। आर्डर प्लीज !

—श्री शीशराम ओला ने शपथ ग्रहण की।

भूतपूर्व राष्ट्रपति डा. जाकिर हुसैन एवं रा. रा. श्री सरदारसिंह के प्रति श्रद्धांजलियां

श्री अध्यक्ष : डा. जाकिर हुसैन, भूतपूर्व राष्ट्रपति, भारत सरकार तथा राव राजा श्री सरदारसिंह, भूतपूर्व सदस्य राजस्थान विधान सभा के निधन पर शोक प्रकट !

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं यह प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं :—

"राजस्थान विधान सभा भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति भारतीयता के गौरवमय प्रतीक मानवता की शांति के साधक,

+ + + अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार भाषण अंकित नहीं किया गया।

Page No 2

(श्री मोहनलाल सुखडिया)

स्वर्गीय भारत रत्न डा. जाकिर हुसैन के देहावसन पर अपनी विनीत श्रद्धांजलि समर्पित करती हूँ। उनके निधन से हमारे राष्ट्र को अपार क्षति हुई है।

वे हमारे राष्ट्र के सुदृढ सम्बल और अपार स्नेह के केन्द्र बन गए थे, और देश को विश्वास हो गया था कि वह कठिन से कठिन समय में उनसे समुचित मार्ग दर्शन प्राप्त कर सकेगा। ऐसे समय में हमारे बीच से उनका राष्ट्रीय नेतृत्व उठ जाना राष्ट्र का दुर्भाग्य है। राष्ट्र का उत्थान, शिक्षा और संस्कृति में नया दृष्टिकोण अपनाने और राष्ट्रीय चेतना को नया रूप देने से ही सम्भव है उनके ऐसे प्रेरणा स्पद विचारों को यह सदन आदर एवं निष्ठा से इस अवसर पर पुनः स्मरण करता है।

सारे देश को डा. जाकिर हुसैन के निधन से जो हार्दिक शोक हुआ है उन शोक संतप्त भावनाओं में यह सदन अपने को सम्मिलित करता है और डा. साहब के परिजनों, मित्रों और सहकर्मियों को विश्वास दिलाता है कि उनके दुःख में वह भी पूरे मन से भागीदार है।

यह सदन कामना करता है कि डा. जाकिर हुसैन का व्यक्तित्व, कुर्तृत्व एवं आलेखन हमें सदा उलझे विषयों में सुलझा मार्ग दर्शाता रहे और ऐसी प्रेरणा देता रहे कि हम अपने देश के लिए उनकी तरह सदा उत्सर्ग के लिए तत्पर रह सकें तथा अपना जीवन उनकी तरह सत्यं, शिवं, सुन्दरं से आलोकित रख सकें" ।

अध्यक्ष महोदय, पिछले सत्र के बाद जब हम यहां पर आज एकत्रित हो रहे हैं तो हमारे देश के एक महान् व्यक्ति हमारे देश के भूतपूर्व राष्ट्रपति, डाक्टर जाकिर हुसैन, के देहावसान का जो जबर्दस्त धक्का इस देश को लगा–इसका अहसास हम सबके दिल में और मन पर इस वक्त काम कर रहा है। माननीय अध्यक्षजी, डाक्टर जाकिर हुसैन का सन् 1857 में हैदराबाद में जन्म हुआ और उसके बाद 1920 में, युवावस्था में ही वह महात्मा गांधी के सम्पर्क में आये तब से उन्होंने देश की सेवा में अपना जीवन लगा दिया। डाक्टर जाकिर हुसैन इस बात में विश्वास रखते थे कि जहां किताबी शिक्षा हो वहां उसके साथ व्यवहारिक शिक्षा को मिलाया जाना चाहिए और अंग्रेजी साम्राज्य के वक्त शिक्षा का आधार बनाया गया था उसको इस देश के लिए उपयुक्त नहीं समझते थे। डाक्टर जाकिर हुसैन ने महात्मा गांधी के साथ मिलकर बुनियादी शिक्षा और देश की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा की पद्धति ए अमली जामा पहनाने के लिए जामिया मिलिया की स्थापना की और उसकी स्थापना करके वह निरन्तर शिक्षा के क्षेत्र के अन्दर काम करते रहे। वह मूल रूप में एक शिक्षा शास्त्री थे, शिक्षक थे, और उन्होंने इसी को अपने जीवन का सबसे बडा उद्देश्य बनाया। महात्मा गांधी के सम्पर्क में होते हुए भी राजनीति में उनकी विशेष दिलचस्पी नहीं थी। उनकी दिलचस्पी थी कि देश सांस्कृतिक दृष्टि से, शैक्षणिक दृष्टि से और मानवता की दृष्टि से ऊंचा उठे और इसके लिए वह जीवन भर प्रयत्न करते रहे। सन् 1962 में वह उपराष्ट्रपति के पद पर चुने गये और इस पद पर रहते हुए उन्होंने इस पद का गौरव बढ़ाया। बाद में देश के

(श्री मोहनलाल सुखाडिया)
वह राष्ट्रपति चुने गये और राष्ट्रपति चुने जाने के पश्चात् देश में उनके प्रति जो सम्मान था, उनके प्रति जो श्रद्धा थी वह जब तक वह जोवित रहे, रही—यह हर एक को मालूम है। उनके देहावसान के बाद भी जो सारे संसार से उनके लिए श्रद्धांजलि अर्पित हुई—उनसे भी सबको यह मालूम होता है कि कितनी महान हस्ती इस देश में आई थी और किस प्रकार उन्होंने हमारे एक मुश्किल के वक्त में एक महत्वपूर्ण कार्य किया। वह एक महान मानवतावादो और एक सुसंस्कृत व्यक्ति थे। वह साम्प्रदायिक सहिष्णुता, एकता और धर्म-निरपेक्षता के प्रतीक थे—अगर यह कहा जाय, तो मैं समझता हूं, उचित ही होगा। जामियां मिलिया में करीब 29 वर्ष तक वह उपकुलपति की तरह काम करते रहे और जहां भी वह जाते हमेशा शिक्षा के सम्बन्ध में उनकी रुचि रहती थी। प्रकृति से भी उनका बहुत निकट का सम्पर्क रहा—ऐसा आभास मिलता था। बगीचों के बारे में, जब कभी कहीं जाते तो कोई नये तरह का पौधा या खनिज पदार्थ भी उपलब्ध हो जाता तो उसका एक संग्रह करने की प्रवृत्ति उनमें थी। इस प्रकार एक सांस्कृतिक जीवन, धार्मिक जीवन और इसके साथ साथ जैसा मैंने कहा, धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त को जैसे उन्होंने अपने जीवन में उतार लिया था। इस प्रकार के व्यक्ति वह थे। भारत को ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी। लेकिन दुर्भाग्य से आज हमारे बीच में वह नहीं हैं। मैं उनकी आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके परिवार के प्रति बहुत बहुत संवेदना प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, हमारे इस सदन के भूतपूर्व सदस्य, 1952 और 1957 में जो चुन कर आये थे, उनियारा के राव राजा साहब—उनका भी इस अर्से में देहावसान हो गया। वह जब तक सदन में रहे, काफी सक्रिय सदस्य थे और अपनी सूझबूझ से इस सदन को उन्होंने लाभ पहुंचाया था। दिवंगत आत्मा के प्रति भी मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके परिवार के सदस्यों को अपनी संवेदना प्रकट करता हूं।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह (डूंगरपुर): अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय डाक्टर जाकिर हुसैन के आकस्मिक निधन से देश को बडी हानि पहुंची है। वैसे उच्च कोटि के, योग्य उदार, निष्पक्ष नेता आज देश के अन्दर नहीं हैं। डा. जाकिर हुसैन हंसमुख, सादगी पसन्द और एक शान्त स्वभाव के सज्जन थे। उनको प्रकृति से विशेष प्रेम था। रकम रकम के गुलाबों को राष्ट्रपति भवन में लगाकर उन्होंने उस उद्यान को अत्यन्त आकर्षक बना दिया। जब वे कौंसिल आफ स्टेट, राज्य सभा के सदस्य थे, वे अग्रणी सम्माननीय सदस्य थे। उसी समय 1952 से 1958 तक मैं भी उस सदन का सदस्य था। डाक्टर जाकिर हुसैन से मैं परिचित था, उनके गुणों का मुझे कुछ अनुभव भी है। उनकी अभिरुचि शिक्षा के प्रति विशेष थी, शिक्षा के सम्बन्ध में विशेषज्ञ थे। जिस प्रकार आंखें बन्द कर गत 15 वर्षों में शिक्षा का प्रसार हुआ है, उसकी कमियों के सम्बन्ध में वे निर्भीकता से आलोचना किया करते थे। ऐसे दूरदर्शी, बुद्धिमान बुर्दबार इन्सान के निधन पर शोक व्यक्त करना एक स्वाभाविक बात है।

डा. जाकिर हुसैन के निधन से बेगम जाकिर हुसैन को आघात पहुंचा है, उसके लिये मैं हार्दिक सम्वेदना प्रकट करता हूं।

Page No 4

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

रावराजा सरदारसिंहजी एक सामन्ती युग के आदर्श सरदार थे। वे निष्कपट थे और निष्पक्ष थे, सिद्धांतवादी थे। निष्कपटता, निष्पक्षता आज के युग में एक ऐसी विशेषताएं हैं कि जो समाज में लुप्त सी होती दिखाई देती हैं। रावराजा सरदार सिंह जी अपने क्षेत्र में एक लोकप्रिय और प्रभावशाली नेता थे। समाज में सर्वत्र उनके प्रति आदर की भावना थी। उनके निधन से जो क्षति पहुंची है, उसकी पूर्ति होना कठिन है।

दोनों दिवंगत आत्माओं, स्वर्गीय राष्ट्रपति डा. जाकिर हुसैन तथा रावराजा सरदार सिंह जी की पवित्र स्मृति में मेरे दल की ओर से तथा मेरी ओर से हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि दिवगत आत्माओं को चिरशांति प्रदान करें तथा डाक्टर जाकिर हुसैन और राव राजा सरदारसिंह के शोकसंतप्त परिवार के प्रति मेरे दिल की ओर से और मेरी ओर से हार्दिक संमवेदना ओर सहानुभूति प्रकट करता हूँ।

इन शब्दों के साथ प्रस्ताव का मैं समर्थन करता हूँ।

श्री भैरोंसिंह (किशनपोल, जयपुर) : अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय डाक्टर जाकिर हुसैन और रावराजा श्री सरदारसिंह जी उनियारा, इन दोनों के प्रति में मेरी ओर से तथा मेरे दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। उनके शोक संतप्त परिवार के लिये में समवेदना प्रकट करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनको इस असहय कष्ट को सहन करने की शक्ति ईश्वर प्रदान करे।

स्वर्गीय डा. जाकिर हुसैन देश के उन महान व्यक्तियों में से थे जिनके जीवन का प्रत्येक पहलू देश के लिए प्रेरणादायक था। वे इस देश में देश के सबसे बडे पदों पर रहे हैं और यह स्वभाविक भी है कि पदों को प्रतिष्ठा के साथ साथ लोगों का कुछ स्वाभिमान तो जागे ही लेकिन उसमें कुछ अभिमान का भी पुट धीरे धीरे उत्पन्न हो जाय। डा. जाकिर हुसैन इन बातों से दूर रहे, भारत के नागरिक होने का स्वाभिमान तो उनमें था ही लेकिन अभिमान लेशमात्र भी नहीं था। अपने सादे जीवन से सारे देश को उन्होंने प्रेरणा दी है। सादा जीवन और उच्च विचारधारा उनके जीवन का ध्येय रहा और इसी आधार पर देश में जो भी काम उन्होंने किये या जो भी काम उनको सुपुर्द किया गया, वह उसमें सफल रहे। जनता का उन्हें समर्थन मिला, प्यार मिला और वे जनता के विश्वासपात्र भी बने। यह हमारा दुर्भाग्य है कि देश की संकट की घडी में हमने इस प्रकार के व्यक्ति को खो दिया। शिक्षा के चेत्र में भी देश की मूल आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर, उसमें आमूल चूल परिवर्तन करने की बात न केवल उन्होंने मुंह से ही कहीं, या पुस्तकों में लिखकर ही संतोष कर लिया बल्कि उसको कार्य रूप में परिणित करने की उन्होंने चेष्टा की, उसमें सफलता प्राप्त की और देश को मार्गदर्शन दिया।

सम्पूर्ण देश उनका बहुत ही ऋणी है और इस आधार के ऊपर उन्होंने जिस प्रकार देश की सेवा की है, देश के नागरिक उसे किसी भी हालत में नहीं भुला सकते।

स्वर्गीय रावराजा सहाब के साथ मुझे विधान सभा में 1952 से 1962 तक रहने

(श्री भैरोंसिंह)

का अवसर मिला। वे वृद्धावस्था में भी विधान सभा की कार्यवाहियों में काफी रुचि लेते थे, वह हम सबके लिए एक प्रकार की प्रेरणा थी। सही चीजों का अध्ययन और उसके साथ साथ उनको विधान सभा में लाकर रखना, विधान सभा के लिए सामग्री एकत्रित करना, इसमें उनकी बडी रुचि थी। इस प्रकार की जन समस्याओं को लाकर, चाहे किसी प्रकार की चीजें हों, विधान सभा के माध्यम से उनके प्रति सरकार का ध्यान आकर्षित करने की वे सदा चेष्टा करते थे।

जब तक विधान सभा के वे सदस्य रहे, उनके कार्यों से विधान सभा को बडा लाभ हुआ। उनका निधन भी हम सबके लिए बडा दुखदायी है।

इन्हीं शब्दों के साथ डा. जाकिर हुसैन के सम्बन्ध में जो शोक प्रस्ताव रखा गया है और इसी प्रकार रावराजा साहब के सम्बन्ध में जो समवेदना प्रकट की गई है उस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं।

श्री बद्री प्रसाद गुप्ता (बानसूर): अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय डा. जाकिर हुसैन और स्वर्गीय राव राजा सरदारसिंह जी, हमारे बीच में नहीं हैं। पिछली बार जब इस सदन में हम इकट्ठे हुए थे तब भी हमने हमारे देश के कई महान व्यक्तियों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की थी और आज भी हम अपने देश के एक महान् नेता स्वर्गीय डा० जाकिर हुसैन को श्रद्धांजली अर्पित कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय, यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि गांधी युग के हमारे महान् नेता, जिनकी सेवाओं की हम सबको आवश्यकता है, धीरे धीरे हमारे बीच में आजादी के बाद उठते जा रहे हैं। एक समय था जब कि यह महान व्यक्ति 19 वीं सदी में पैदा हुए थे और 1897 में जिनका जन्म हुआ था। उनकी निष्काम सेवायें देश में मशहूर हैं। वह धीरे धीरे अपने सेवा के भाव की वजह से हमारे देश के सबसे बड़े पद पर इलेक्टेड थे मुझे उनके निधन से बडा दुख हुआ है और मैं समझता हूं कि हमारा सारा देश उनको एक महान राष्ट्रपति, कुशल राजनीतिज्ञ और सफल शिक्षा शास्त्री के रूप में उनकी सेवाओं को हमेशा याद रखेगा। मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और उनके संतप्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता हूँ।

इसी तरह हमारे राव राजा श्री सरदार सिंहजी 1952 से 1962 तक इस सदन के सदस्य थे। उस समय भी मुझे इस सदन का सदस्य रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और मुझे अब तक याद आता है जबकि वह अपोजीशन बैंचिज पर बैठा करते थे। वह बडे सहृदय और मिलनसार व्यक्ति थे, मुझे कई बार उनसे मिलने का अवसर प्राप्त हुआ और उनके निधन से मुझे दुख हुआ मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और दुखी परिवार के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि दोनों महान् आत्माओं को शांति प्रदान करें।

श्री रामकिशन (बैर): अध्यक्ष महोदय, यह महात्मा गांधी की देन थी कि देश के तरह तरह के लोगों का स्वतंत्रता के संग्राम में अलग अलग प्रकार से उपयोग किया। चाहे हमारे स्वर्गीय राष्ट्रपति डा0जाकिर हुसैन का राजनैतिक इतिहास कोई बडा नहीं

(श्री रामकिशन)

हो, लेकिन एक बात निश्चित है कि उस समय देश का जिस प्रकार का वातावरण था, हिन्दी और उर्दू के सवाल को लेकर, डा. जाकिर हुसैन ने बुनियादी तालीम और देश की भाषा समस्या को सुलझाने के लिए जिस प्रकार कार्य किया, अगर आज की सरकारें थोडा बहुत भी उस पर अमल करती तो भाषा का सवाल खडा नहीं होता। मैं इस दृष्टि से डा. जाकिर हुसैन की निसंदेह प्रशंसा करता हूँ। वह मूक शिक्षा शास्त्री थे जिनकी रचनात्मक आकांक्षायें थीं। यह दूसरी बात है कि परिस्थितियों के कारण वह पूरी न हुई हों लेकिन जो जो उनकी प्रतिभा थी, प्रतिमा की दिशायें थीं, उनसे उन्होंने सारे देश को रचनात्मक दृष्टिकोण दिया। हिन्दू मुसलमानों के सवाल पर, भाषा के सवाल पर और गांधी जी के दूसरे जो रचनात्मक कार्य थे, उनके बारे में थे, उन्होंने जो प्रतिमा का परिचय 1947 से पहले दिया, शायद राष्ट्रपति के रूप में इतना बडा काम वह नहीं कर पाए, उसका दोष उनको नहीं दिया जा सकता। जो चालू सरकार है उन्होंने उनको प्रतीक मात्र ही चाहे राष्ट्रपति रखा हो लेकिन गांधीजी ने जिन प्रतिभाओं को इकट्ठा किया और देश की समस्याओं को सुलझाने में जिसप्रकार योग प्राप्त किया उनमें डा. जाकिर हुसैन, शायद देश के कई उस समय कर्णधार थे उनमें उनका नाम भी गिना जायगा। मैं अपनी तरफ से, अपने दल की तरफ से डा. जाकिर हुसैन के लिए श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ, यह निश्चित बात थी कि सन् 1967 के चुनाव के समय हम लोगों ने खास तौर से उनका विरोध किया था लेकिन विरोध उनके व्यक्तित्व से नहीं था। उस समय जो राजनैतिक परिस्थितियां थीं, हम एक नया रास्ता निकालने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन कुछ लोग ऐसे थे जिन्होंने दूसरी तरह उनका विरोध किया वे उन्हें साम्प्रदायिक एकता का प्रतीक मानते थे, उन दिनों उन पर आरोप लगाते थे। मैं डा. जाकिर हुसैन के लिए श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

स्वर्गीय राव राजा सरदारसिंह से मेरा कोई सीधा परिचय नहीं था लेकिन जैसा मैंने सुना है, अपने क्षेत्र के लिए वे कर्मठ और लोकप्रिय नेता थे। मैं उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और दोनों परिवारों के साथ संवेदना प्रकट करता हूँ।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर): अध्यक्ष महोदय, डाक्टर जाकिर हुसैन के निधन पर जो मुख्य मंत्री ने शोक प्रस्ताव रखा है, मैं उसमें अपने आप को शामिल करता हूँ। डा. जाकिर हुसैन भारत में एक अल्पसंख्यक धर्म जो हमारे देश में मुस्लिम्स के रूप में है, उस धर्म में पैदा हुए थे। हमारे देश का विभाजन जिन हालत में हुआ और जिन अल्पसंख्यक धर्म को मानने वालों ने यह नारा दिया कि हमारे भारत में उन अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा नहीं हो सकेगी, डा. जाकिर हुसैन का भारतवर्ष के सबसे ऊंचे पद पर आसीन होना, यह उस बात की गल्ती को, असत्यता को पूर्ण रूप से साबित करता है।

अध्यक्ष महोदय, जहां एक ओर इस प्रकार की धारणायें उन अल्पसंख्यकों की थीं वहां बहुसंख्यक धर्म को मानने वालों में भी खास तौर से विभाजन के बाद अल्पसंख्यक राजनीतिज्ञों के प्रति संदेह की भावना व्यक्त करना कुछ लोगों के लिए एक सामान्य बात

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

हो गई थी। परन्तु डा. जाकिर हुसैन ने अपने अल्पकाल में राष्ट्रपति के पद या उप-राष्ट्रपति के पद को जिस प्रकार निभाया, अपनी निष्पक्षता की जो छाप उन्होंने छोडी उसका प्रभाव सारे देश पर पडा चाहे कोई व्यक्ति किसी भी धर्म को मानने वाला हो। ऐसे समय में भी जब दुर्भाग्यवश भारत और पाकिस्तान में युद्ध हुआ उस समय हमारें देश के कर्णधार डा. जाकिर हुसैन उपराष्ट्रपति पद पर थे। उन्होंने सारे देश की भावनाओं का अनुभव हासिल किया था। इस रूप में हमारी डेमोक्रेसी इस बात को साबित कर सकी और डा. जाकिर हुसैन अपने कर्तव्यपरायणता से इस बात को साबित कर सके कि इस डेमोक्रेसी में सब लोगों को समान अवसर आगे बढने का है और जो लोग धर्म से ऊंचे उठ कर, संप्रदाय से ऊंचे उठ कर काम कर सकते हैं, वे केवल एक धर्म के नहीं बल्कि सारे राष्ट्र के नेता होते हैं।

डा. जाकिर हुसैन में जो योग्यता थी और जो कार्य उन्होंने सारे राष्ट्र के लिए एक शांत, एक मूक सेवक के नाते किया है, उसकी छाप उन्होंने सारे देश पर छोडी है और मै समझता हूँ, आने वाली पीढ़ियां उनके इस काम को पूरी तौर से याद रखेंगी। इन्हीं शब्दों के साथ मैं डा. जाकिर हुसैन और उनके संतप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता हूँ।

अध्यक्ष महोदय, इसी बीच में हमारे इसी सदन के एक भूतपूर्व माननीय सदस्य राव राजा सरदारसिंह जी का भी देहांत हुआ। मेरा दुर्भाग्य है कि मेरा उनसे कोई निजी परिचय नहीं रहा इस लिए उनकी विशेषताओं के बारे में कोई जानकारी नहीं है। मैं उस दिवंगत आत्मा के प्रति भी अपनी श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूँ।

श्री मनोहरसिंह मेहता (मांडलगढ): अध्यक्ष महोदय, डा. जाकिर हुसैन साहब की मृत्यु मेवाड की उस कहावत को चरितार्थ करती है "बाप का मरना और काल का पड़ना"। जब कि देश में चारों तरफ से नैतिकता का और हर तरह का अकाल है उस वक्त गांधीजी का महान् शिष्य चला गया। डा. जाकिर साहब ने कहा था कि सारा भारत मेरा घर है और उसके लोग मेरा परिवार। मैं सच्ची लगन से इस घर को सुन्दर और मजबूत बनाने की कोशिश करूंगा जिससे कि इस महान् देशवासियों का वह उपयुक्त घर हो। डा. जाकिर साहब जब गुलाबपुरा पधारे थे तो उन्होंने वहां कहा था कि खराब हाई स्कूल से किन्डरगार्डन अच्छा है और बडी इमारत होने से कभी कोई अच्छा भवन नहीं हो जाता। अच्छे विद्यार्थी और अच्छे शिक्षक होने से ही देश की हालत सुधर सकती है। डा. जाकिर साहब हिन्दू मुस्लिम एकता के भी प्रतीक थे। रामनवमी के दिन राम को जब वे तिलक करते थे तो मालूम होता था कि वे कितने धर्मनिर्पेक्ष हैं। बुनियादी तालीम के गांधीजी ने उन्हें चुना। गांधीजी के चुने हुए स्तम्भों में से एक स्तम्भ थे। यदि उनकी बात मानली होती उद्योग के जरिये से शिक्षा तो आज बेकारी की बात देश में नहीं होती। उनका नाम अमर होने वाला है यह बात कल समझ में आने वाली है कि देश म उद्योग से ही शिक्षा होनी चाहिए। अगर उनके प्रति हमारी सच्ची निष्ठा है और उनकी आत्मा को शान्ति देना चाहते हैं तो एक हमारे सामने

(श्री रामानन्द अग्रवाल)
रास्ता है कि उन्होंने जो मार्ग बताया उस तरफ चलें।

दिवंगत राव राजा साहब के मैंने दर्शन नहीं किये लेकिन उनके सुयोग्य पुत्रों के बारे में सुन चुका हूँ। वही पिता धन्य है जिसने अपने से सवाये पुत्र पैदा किये हैं। मृत्यु भोज राजस्थान में होते आ रहे हैं लेकिन राव राजा साहब के सुपुत्रों ने मृत्यु भोज न करके 60 हजार रुपया निकाला। बच्चों की शिक्षा के लिये अपंगों को काम देने के लिये इसका उपयोग होगा जिन राव राजा के सुपुत्र इस तरह के हों तो वे जाने कितने अच्छे होंगे। मैं उनके प्रति भी अपनी श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं।

श्री दुर्गालाल बाढदार (हवामहल, जयपुर):—

प्रथम राष्ट्रपति पद रहे श्री राजेन्द्र प्रसाद
राधाकृष्णन ने दिया, विद्या विनय विलास
डाक्टर श्री जाकिर हुसैन आये
यही राष्ट्रपति पद पर से परलोक सिधाए
कहे 'सरल' कवि भारत रत्न विभूषित सन्मति
मर कर पाया मान तुम्हीं ने प्रथम राष्ट्र-पति ॥प्रथम॥

उणियारा के रावजी थे सच्चे सरदार
सदा निभाते जो रहे समता का व्यवहार
मर कर होता अमर जो वह जीवन धन्य
उसके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित अल्प अनन्य ॥

श्री अध्यक्ष : सदन के माननीय नेता एवं विरोधी दल के माननीय नेताओं ने जो शोक संतप्त संवेदनाशील भावनायें महामहिम डा. जाकिर हुसैन व राजा सरदार सिंह जी के प्रति एवं उनके संतप्त परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट की उन भावनाओं में मैं भी अपने आपको सम्मिलित करता हूँ।

राष्ट्रीयता के प्रतीक एवं धर्मनिरपेक्षता के प्राण डा. जाकिर हुसैन का राष्ट्र के ऊंचे से ऊंचे पद पर होते हुए भी एक साधारण से साधारण व्यक्ति के साथ भी अपनत्व रहा। डा. जाकिर हुसेन एक कुशल शिक्षक, सशक्त लेखक एवं एक विनम्र, सरल कार्यकर्ता और साथ ही साथ बुनियादी शिक्षा पद्धति के निर्माता के रूप में राष्ट्र में प्रख्यात हुए। ऐसे मौके पर जब कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एव आर्थिक स्थिति का असन्तुलन हो रहा है उस समय डा० जाकिर हुसेन का अपने मध्य से जाना यह भारत की आत्मा के ऊपर बडा आघात है। इस मौके पर माननीय सदस्यों ने जो भावनायें प्रकट की हैं मैं उनका अनुमोदन करते हुए डा. जाकिर हुसैन की आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ एवं साथ ही उनके संतप्त परिवार प्रति संवेदना एवं सहानुभुति प्रकट करता हूँ।

राव राजा सरदारसिंह इस सदन के एक क्रियाशील एवं कर्मठ सदस्य रहे। मुझको भी उनके साथ उपाध्यक्ष के रूप में बैठने का अवसर मिला। वे शान्त प्रकृति के थे एवं इस सदन के कार्य-क्रम के प्रति सदैव सक्रिय अभिरुचि रखते रहे। उनके निधन से भी राजस्थान को और मुख्यतया उनके क्षेत्र को क्षति पहुंची है। मैं उनके परिवार के प्रति भी संवेदना एवं

(अध्यक्ष)

सहानुभूति प्रकट करता हूं। साथ ही दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

मैं इस अवसर पर कुछ भी अधिक न कहते हुए माननीय सदस्यों से निवेदन करना चाहूंगा कि वे दो मिनट के लिए खड़े होकर मौन रूप से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करें।

(दो मिनिट खड़े होकर मौन श्रद्धांजलि अर्पित की गई)

माननीय मुख्य मंत्रीजी ने जो प्रस्ताव प्रस्तुत किये हैं और सदन ने दिवंगत आत्माओं के प्रति जो हार्दिक संवेदना प्रकट की है वे उनके संतप्त परिवारों के पास पहुंचा दिये जावेंगे।

(विराम)

सदन की बैठक कल दिनांक 12 अगस्त 1969 के प्रातः 11 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही म. प. 3.40 बजे दिनांक 12-8-69 के प्रातः 11.00 तक के लिये स्थगित हुई)

शुद्धि-पत्र

(सोमवार, दिनांक 11 अगस्त, 1969)

स्क. सं.	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
1.	5	श्रो निजंनाथ आचार्य	श्री निरंजननाथ आचार्य
2.	अन्तिम	प्रर्ट ।नवता	प्रतीक मानवता
3.	अन्तिम से 16	क ए	का एक
5.	„ 15	क	के
5.	1	आय	आये
6.	अन्तिम से 16	शाक संतप्त	शोक संतप्त
10.	अन्तिम से 11	ढुख	दुख
13.	13	डे।।क्रेसी	डैमोक्रेसी
17.	शीर्ष	(अध्यक्ष)	(श्री अध्यक्ष)